# उभयचर क्यों लुप्त हो रहे हैं?

**मामले का अध्ययन**

उभयचर ( मेंढक, टोड और सेलामेंडर) पृथ्वी पर सबसे पहले लगभग 35 करोड़ वर्ष पूर्व प्रगट हुए थे। उभयचर जलीय आवास से स्थलीय आवास की ओर स्थानांतरित होने वाले पहले कशेरूकी थे तथा इसलिये उन्होंने पृथ्वी पर जानवरों के विकासात्मक इतिहास में एक महत्वपूर्ण कड़ी का काम किया है।

1980 के बाद से संसार की अनुमानित 5280 उभयचर प्रजातियों (जिनमें 2700 मेंढक और टोड प्रजातियाँ शामिल हैं) में कई सौ प्रजातियों की आबादी, विश्व के हर हिस्से में कम हुई है, जिनमें सुरक्षित क्षेत्र भी शामिल हैं। विश्व संरक्षण संघ (वर्ल्ड कंजर्वेशन यूनियन) के अनुसार सभी ज्ञात उभयचर प्रजातियों में से 25 प्रतिशत या तो समाप्त हो गई हैं या संकट में हैं या
विलुप्त होने की कगार पर हैं। भारत में उभयचरों की 148 प्रजातियाँ, जो कुल उभयचर आबादी का लगभग 31 प्रतिशत है, संकटग्रस्त श्रेणी में आती हैं। (स्रोत : http://www.wii.gov.in/indianfauna/globally%20Threatened%20fauna.pdf)

मेंढक अपने जीवन चक्र के विभिन्न बिंदुओं पर पर्यावरणीय विघटन के लिये विशेष रूप से संवेदनशील होते हैं। टैडपोल के रूप में वे पानी में रहते हैं और पौधों को खाते हैं तथा वयस्कों के रूप में वे अधिकांशतयः ज़मीन पर रहते हैं और कीड़ों को खाते हैं (जिससे उन्हें कीटनाशकों से खतरा पैदा हो जाता है)। उनके अंडों में विकिरण या प्रदूषण को रोकने के लिये कोई रक्षात्मक खोल नहीं होता। वयस्क के रूप में वे अपनी पतली पारगम्य त्वचा, जो पानी, वायु या मिट्टी से प्रदूषक तत्वों को जल्दी से अवशोषित कर सकती हैं, के ज़रिये पानी और वायु को अंदर लेते हैं।

ऐसा कोई एक कारण नहीं बताया गया है जो उभयचरों के पतन के लिए अकेला जिम्मेदार हो। यद्यपि वैज्ञानिकों ने इसमें योगदान देनेवाले ऐसे कई सहायक कारकों की पहचान कर ली है जो मेंढ़क जैसे उभयचरों को उनके जीवन चक्र के विभिन्न बिंदुओं पर प्रभावित कर सकते हैं। इन कारकों में शामिल हैं: (1) आवास की क्षति और विखंडन (2) दीर्घकालीन सूखा, जो प्रजनन पोखरों को सुखा देता है जिससे कुछ टैडपोल ही ज़िंदा बच पाते हैं (3) प्रदूषण (4) समतापमंडलीय (स्ट्रैटोस्फेरिक) ओज़ोन के घटने के कारण पराबैंगनी विकिरण में वृद्धि (5) परजीवी (6) अत्यधिक शिकार, विशेषकर एशिया और फ्रांस में जहाँ मेंढक के पैरों को स्वादिष्ट खाद्य माना जाता है (7) वायरल और फंफूद की बीमारियाँ तथा (8) प्राकृतिक स्थान-परिवर्तन,

या उनके परिवेश में जानबूझकर बाहरी परभक्षियों और प्रतिद्वंद्वियों (जैसे कि मछली) तथा रोगाणुओं का प्रवेश कराया जाना।

वैज्ञानिक तीन कारणों से उभयचरों के पतन को लेकर चिंतित हैं।

- उनका पतन यह दर्शाता है कि विश्व के पर्यावरणीय स्वास्थ्य का तेज़ी से ह्रास हो रहा है, क्योंकि उभयचर आम तौर पर (1) मजबूत उत्तरजीवी होते हैं (आसानी से नष्ट नहीं होते) तथा (2) पर्यावरणीय परिस्थितियों में बदलावों जैसे प्रदूषण और मौसम के परिवर्तन के संवेदनशील सूचक होते हैं।
- वयस्क उभयचर विभिन्न पारिस्थितिकीय तंत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए चिड़ियों की अपेक्षा उभयचर ज़्यादा कीड़े खाते हैं। कुछ पारिस्थितिकीय तंत्रों में उभयचरों के विलोपन का मतलब ऐसी अन्य प्रजातियों जैसे मछलियों, स्तनधारियों आदि का विलोपन भी हो सकता है जो उभयचरों या उनके लार्वा को खाती हैं।
- उभयचर एक प्रकार से औषधीय उत्पादों के आनुवांशिक कोषालय भी होते हैं। अनेक ऐसे यौगिकों, जिनका इस्तेमाल दर्दनाशक दवाइयों और अन्य जीवाणुनाशक दवाइयों को बनाने में किया जा सकता है, को उभयचरों की त्वचा से रिसनेवाले स्रावों (सिक्रीशन्स) से अलग किया गया है।